[illegible] [illegible] [illegible]

स्वामी विवेकानन्द का योग [illegible] विचार

विवेकानन्द के अनुसार योग का [illegible] है [illegible] विवेकानन्द [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है

योग का लक्ष्य है ईश्वर के साथ संयोग स्थापित करना। भारतीय सभी धर्मों का एवं दर्शन [illegible] का [illegible] समान है, जो भिन्न-भिन्न प्रकार [illegible] का [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ईश्वर के साथ सम्बन्ध स्थापित करना ही [illegible] है।

मानव विवेक, संकल्प, भावना एवं चंचल इन्द्रियों का [illegible] [illegible] [illegible] अतः ज्ञान योग, भक्ति योग, राज योग, कर्म योग एवं [illegible] का लक्ष्य एक ही [illegible] [illegible] [illegible] पृथक नहीं किया जा सकता। विवेकानन्द इन चारों योगों को पृथक वर्णन करते हैं लेकिन एक दूसरे से अलग नहीं मानते। वे चारों मार्ग पृथक-पृथक [illegible] हैं लेकिन लक्ष्य सबका एक है ईश्वर की प्राप्ति।

(1) ज्ञान योग — विवेकानन्द ज्ञान योग में विशेष निष्ठा रखते हैं। वे आत्मा को एक निरपेक्ष मानते हैं। उन्हें

जो [illegible] बुद्धि द्वारा प्राप्त ज्ञान से [illegible] सम्पादित होता है जिस प्रकार [illegible] लिए इन्हें निदिध्यासन से विश्व [illegible] में ज्ञान [illegible] परमात्मा का साक्षात्कार होता है। ज्ञान [illegible] के कारणों का बोध होता आत्मा का बोध होता। मिथ्या ज्ञान व विवेक का अभाव ही अज्ञान का कारण [illegible] ज्ञान के बाद ही [illegible] विवेक का बोध होता है। शंकर [illegible] में कहा है कि ज्ञान [illegible] को नष्ट कर देती है। ज्ञान मानव को बन्धन मुक्त कर देता है। ज्ञान मानव को [illegible] से साक्षात्कार कराता है।

गीता दो प्रकार के ज्ञान की प्राप्ति कराती है- एक जो बुद्धि के द्वारा आत्म-अनात्म के स्वरूप का प्रमाण करता है दूसरा वह जो अन्तर्दृष्टि के द्वारा परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करता है।

सिद्धान्तों का कहना है कि ईश्वर की प्रति प्रेम [illegible] से उत्पन्न होता है [illegible] के समक्ष में विश्व के [illegible] अनुभव करने का मुख्य मार्ग है।

आत्म-अनुभूति जो कि बिना ज्ञान के सम्भव नहीं है [illegible] के सम्भव नहीं। जिस प्रकार अग्नि लकड़ी को राख में बदल देती है उसी प्रकार ज्ञान सभी प्रकार के कर्मों को ज्ञान में बदल देती है

(i) ज्ञानाग्नि: सर्व कर्माणि भस्मसात्कुरुते — गीता-4-37 गीता में कहा गया है कि सभी कर्मों का अन्त ज्ञान में ही होता

(ii) सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते — गीता-4-33

(2) भक्ति योग — भक्ति योग ईश्वर के आध्यात्मिक प्रेम को कहते हैं भक्ति योग का मुख्य लक्ष्य है ईश्वर के साथ सम्बन्ध स्थापित करना।

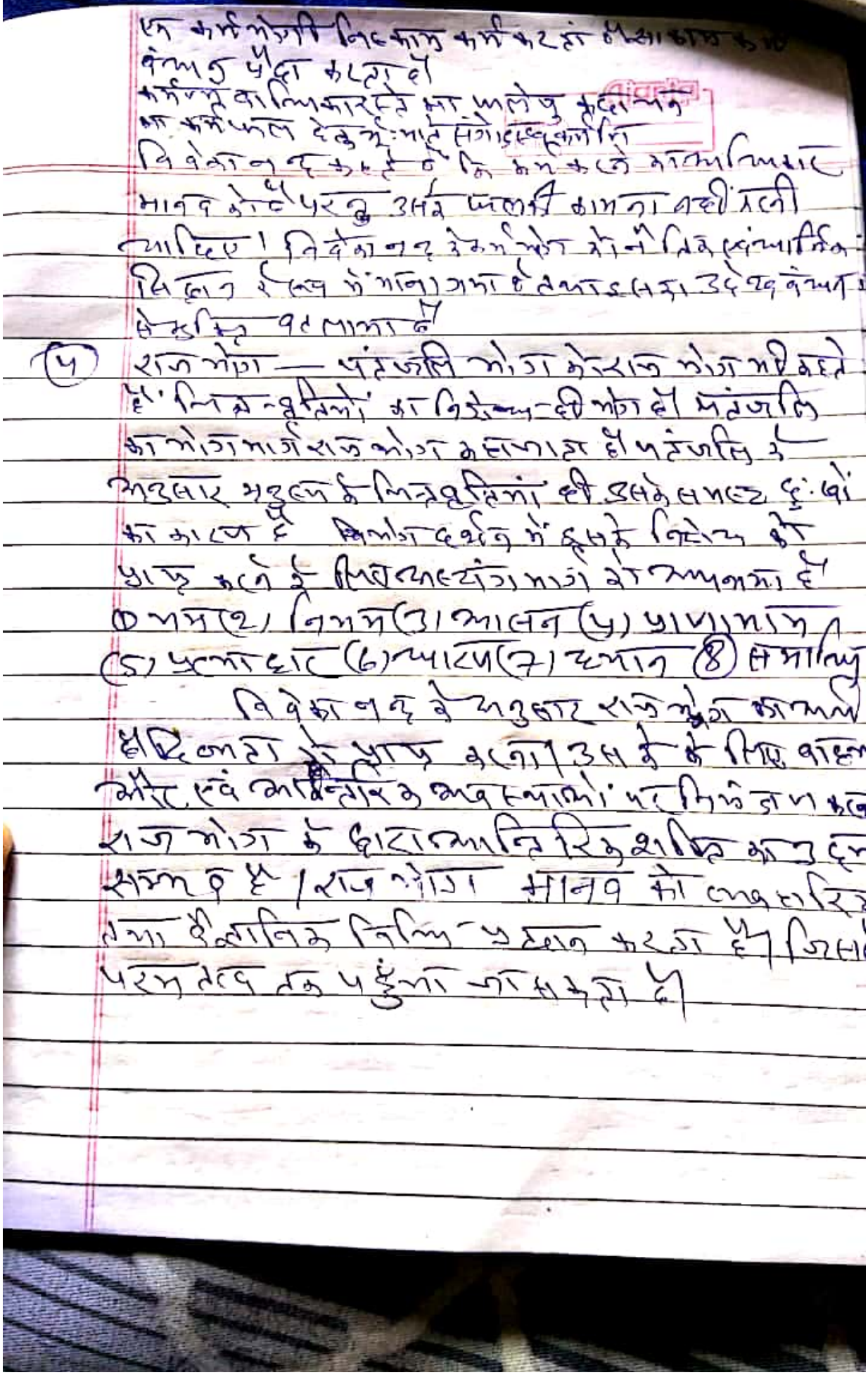

एक कर्मयोगी निष्काम कर्म करता है ऐसा काम करके वैराग्य पैदा करता है
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि
विवेकानन्द कहते हैं कि हम कर्म से व्यावहारिक मानव होते हैं परन्तु उसके फल की कामना नहीं रखनी चाहिए। विवेकानन्द के कर्मयोग में निष्काम व्यावहारिक सिद्धान्त के रूप में माना गया है तथा इसका उद्देश्य वेदान्त से मुक्ति पाना है

(5) राजयोग — पतंजलि योग को राजयोग भी कहते हैं। चित्तवृत्तियों का निरोध ही योग है। पतंजलि का योग मार्ग राजयोग कहलाता है। पतंजलि के अनुसार मनुष्य के चित्तवृत्तियों ही उसके समस्त दुःखों का कारण है। योग दर्शन में इसके निरोध को प्राप्त करने के लिए अष्टांग मार्ग बताया गया है (1) यम (2) नियम (3) आसन (4) प्राणायाम (5) प्रत्याहार (6) धारणा (7) ध्यान (8) समाधि

विवेकानन्द के अनुसार राजयोग का लक्ष्य धार्मिकता को प्राप्त करना। उसके लिए बाह्य और एवं आन्तरिक अवस्थाओं पर नियंत्रण करके राजयोग के द्वारा आत्मिक शक्ति का उदय सम्भव है। राजयोग मानव को व्यावहारिक तथा वैज्ञानिक विधि प्रदान करता है जिससे परम तत्व तक पहुँचा जा सकता है।

श्री कृष्ण ने भी [illegible] देना किसी तरह
से भक्त का [illegible] नाश नहीं होता है।
क्योंकि सदा सद्गुण है [illegible]
के लिए मानव को ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण आवश्यक
है भक्ति मानव और ईश्वर के बीच [illegible] स्थापित कर
सकती है। विवेकानन्द रामकृष्ण परमहंस के कारण
सम्पर्क में आने से भक्ति योग में विश्वास किया। उन्होंने सभी
प्रकार के शुद्ध प्रेम को भक्ति की अभिव्यक्ति माना है।
जहाँ जहाँ प्रेम है वहाँ भक्ति का निवास है। उनका कहना है
कि सच्चा आनन्द-प्राप्ति ईश्वर को मानव प्रेम के माध्यम से
प्राप्त कर सकता है। भक्ति योग में कोई भेद का प्रश्न
नहीं रहता है भक्त और भगवान का अन्तर दूर कर ईश्वर ही में
लीन हो जाता है।

तुलसीदास ने ईश्वर प्राप्ति के लिए भक्ति मार्ग को अनुपम
की है उनका कहना है कि जो राम का भक्त है, वही केवल
गुणी, ज्ञाता, जगत में पूज्य, पण्डित, दानी, धार्मिक, कुलरक्षक
नीति निपुण, चतुर, कुलीन, कवि, कोविद और रघुवीर ही
भक्ति सभी सद्गुणों की खान है।

(3) कर्म योग – कर्म योग को विवेकानन्द एक नैतिक एवं
धार्मिक सिद्धान्त माना है। विवेकानन्द कर्मयोग को
आधार आत्मा व धर्म शास्त्र का मूल मंत्र माना है कर्म-
योग किसी दार्शनिक अवधारणा का आधार नहीं रहा।
"योगः कर्मसु कौशलम्" गीता में कर्म को कुशलतापूर्वक
रखना ही योग की श्रेणी में रखा है। इस प्रकार [illegible]
कर्मयोग [illegible] निष्कामता का महत्व वर्णन है कर्म [illegible]
करता है, अतः कर्म [illegible] मृत्यु है। कर्म जीवन है [illegible]
जगत के प्रत्येक व्यक्ति को कर्म ही करना रहता है जो व्यक्ति
कर्म नहीं करता, वह [illegible] में [illegible] है